विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (III)

"दूसरा ग्राहक हाथी था," भैरा ने कहा।

"हाथी!" कूना ज़ोर से चीखी।

"हाथी की प्याली तो बहुत बड़ी होगी।" बोलू चलकर कूना के पास जाकर खड़ा हो गया। बोलू को पास आया देखकर उसने बोलू का हाथ पकड़ा और कहा, "बोलू तू बोलना मत। नहीं तो मेरे पास से चला जाएगा।"

"नहीं बोलूँगा," बोलकर बोलू प्रेम के पास चला गया। तब कूना बोलू के पास जाकर फिर से खड़ी हो गई।

"हाथी की प्याली बालटी के बराबर होगी?" प्रेमू ने पूछा।

"वही छोटी प्याली। प्याली भरकर भी नहीं। पिताजी कहते हैं प्याली भरा मत करो। तश्तरी में चाय गिरनी नहीं चाहिए," भैरा ने कहा।

"शेर नहीं आता चाय पीने?" कूना ने बोलू का हाथ पकड़े-पकड़े पूछा।

"शेर नहीं आता। शेर से हाथी भी डरता है। शेर क्यों आएगा? मेरे पिता केटली में तीन-चार कप चाय लेकर शेर को देने जाते हैं। शेर अपनी गुफा में चाय पीता होगा। जब पिता लौटकर आते हैं तो बहुत खुश रहते हैं। जाते समय खुश नहीं रहते।" भैरा बोलू की तरह बोलते हुए चल रहा था। भैरा को सुनते हुए सब उसके साथ चल रहे थे। कूना भी बोलू का हाथ छोड़कर चल पड़ी थी। बोलू चुपचाप खड़ा रह गया था।

"शेर से जान बच गई इसलिए खुश होते होंगे," बोलू ने भैरा के पास जाते हुए कहा। कूना ने प्रेमू को हटाकर बोलू के पास खड़े होने के लिए जगह बनाई और कहा, "सच बात है।"

"तुम चाय पीते हो?" बीनू ने भैरा से पूछा।

"पिता जी मना करते हैं।"

"दूध के लिए होटल में कितनी गाय हैं?" प्रेमू ने पूछा।

"हमारे बाप-दादों ने भी गाय नहीं पाली।"

"चाय के लिए दूध कहाँ से लाते हो?" बोलू ने पूछा। बोलू की कमीज़ पीछे से पकड़े बोलू के साथ कूना भी चल रही थी। बोलू रुका तो कूना भी रुक गई।

"जंगली भैंसी को दुहकर दूध लाते हैं," भैरा ने कुछ ज़ोर से सबसे कहा।

"क्या कहा?" बोलू ने दुबारा सुनने के लिए कहा। कहते ही बोलू झटके से बढ़ा। और कूना गिर पड़ी। पर कूना रोई नहीं। "क्या जंगली भैंसी ने दूध दुहने दिया?" यह प्रश्न सबके मन में उठा था। पर किसी ने पूछा नहीं था। परन्तु भैरा ने उत्तर दिया शेर के लिए जब चाय बननी है तो डरकर जंगली भैंसी तैयार हो गई।

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी में एक बूढ़े और एक बूढ़ी रहते थे। अँधेरा होते ही चन्द्रमा झोपड़ी की हरी घास के छप्पर से दुबका हुआ निकलता था। कोई पूछे कि चन्द्रमा कहाँ रहता है तो उसका पता हरी घास का छप्पर होता। यह पता सभी बच्चों को मालूम था। हरी घास के परदे की आड़ में चन्द्रमा छुपा हुआ सबको दिखता था। यह शीतल फुरहरी का दृश्य होता। देखने से लगता हवा में कँपकँपी है। हरी घास भी काँपती है। हरी घास जिस तरह काँपती देखने वाले उसी तरह सिहरते। रात में भी हरी घास चन्द्रमा के उजाले में हरी दिखती। सुबह जब सूर्य हरी घास के पीछे से निकलता तो छोटी-बड़ी घास की नोंकों पर ओस की बूँदें रंगीन चमकतीं। प्रायः बच्चों के मन में आता कि हरी घास की छप्पर से चन्द्रमा को छुआ जा सकता है और इन्द्रधनुष को लाया जा सकता है। सुबह सूर्य का प्रकाश हरी घास के हरे में भिदा हुआ उज्जवल दिखाई देता। चन्द्रमा और सूर्य के कारण हरी घास की झोपड़ी को देखो तो लगता कि झोपड़ी में बूढ़े और बूढ़ी युगों से दिन-रात रह रहे हैं। और सूर्योदय तथा सूर्यास्त का उत्सव उन्हीं की झोपड़ी में होता होगा जो कई सुबहों और साँझों को अच्छे से जी चुके होते हैं। अगला दिन जीवन के उत्सव को पिछले दिनों से सबसे आगे होकर देखता है।

बस्ती की प्रत्येक झोपड़ी में सूर्य और चन्द्रमा का निकलना अलग-अलग तरह से सुन्दर था। दिन का हीरा होकर सूर्य बस्ती में दिन भर

चमकता और रात का पुखराज होकर चन्द्रमा। बस्ती के सभी छप्परों पर तारे बिखरे पड़े हुए चमकते। बस्ती का दृश्य हर दिन सुन्दर दृश्यों की प्रतिद्वन्द्विता में पहले से ज़्यादा सुन्दर होता।

कक्षा में बच्चों का मन होता तो आलों में भी बैठ जाते। जब सभी बच्चे कक्षा में उपस्थित होते तो बहुत-से आलों में बैठे होते। कुछ आले इतने बड़े थे कि भैरा जितना बड़ा लड़का उसमें बैठ जाता। बच्चे आलों में या तो नीचे पैर लटकाकर बैठते और किताब, स्लेट घुटनों पर रख लेते या पालथी मोड़कर बैठ जाते और गोद में किताब रख लेते। सभी बच्चे नहा-धोकर, तेल-कंघीकर साफ-सुथरे स्कूल आते। जब ये आले में बैठे होते तो बहुत सजावटी लगते। जैसे घर से गुड्डे को सजाकर स्कूल के आले में रख दिया गया है। पहले कूना अपनी कक्षा के आले पर चढ़ नहीं पाती थी। कक्षा के बच्चे आले पर चढ़ने में उसकी मदद करते। अब उसकी कोशिश होती कि वह सबसे ऊँचे आले में जाकर बैठे। दिवाल में जगह-जगह खूँटियाँ भी गड़ी थीं। ऊपर की खूँटी पकड़कर आले पर पैर रखते हुए सबसे ऊपर के आले तक पहुँचा जा सकता था। बच्चे बिना डरे आले के अन्दर घुसे पढ़ते। वे नहीं गिरते पर हाथ से किताब छूटकर गिर जाती। कलम, पेंसिल गिर जाती। स्लेट भी गिर सकती थी। ऐसे में लड़के अपने को बचाकर बैठते। परन्तु चीज़ें वहीं गिरतीं जहाँ बच्चे नहीं होते। ऊपर बैठे बच्चे भी सावधान होते कि चीज़ें न गिरें या बार-बार नीचे गिरने वाली चीज़ों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के साथ मित्रता हो जाती हो। जैसे बार-बार साथ होने से दो बच्चों में हो जाती है। इसलिए चीज़ें अलग हटकर गिरतीं। सावधानी से गिरतीं। नीचे धीरे-से धरा जातीं। गिरने की आवाज़ नहीं होती। इसके बाद भी स्लेट-पट्टी की कलम तीन-चार टुकड़ों में टूट जाती। कलम के नीचे गिर जाने के बाद भी इस ज़रूरत की पूर्ति हो जाती थी। और भी कलम के टुकड़े उनकी जेब या बस्ते में होते। यह भी हो सकता था कि छोटे-छोटे कलम के टुकड़े इल्ली की तरह दीवाल पर चढ़ जाते होंगे। धीरे-धीरे आले तक पहुँच जाते। फिर बस्ते के अन्दर। कॉपी, किताब, स्लेट-पट्टी, कलम आदि का घोंसला या घर बस्ता होता। दिन भर की नीचे गिरी पेंसिलें, कलम, रबर रात भर में आलों में रखा जातीं। हो सकता है कि कबूतर भी चोंच में दबाकर इन्हें आलों में रखते हों। इधर-उधर बने कबूतर के घोंसलों में भी इस तरह की चीज़ें होती थीं। कबूतर बच्चों के लिए जमा रखते हों कि कभी काम पड़ जाए।

आले में बैठने की शुरुआत बोलू ने की। पहले जब गुरूजी नहीं होते थे तब। फिर गुरूजी होते हैं तब भी। कुछ दिनों के बाद से ही बोलू सबसे ऊपर रोशनदान के पास के आले में बैठने लगा था। ऊपर बैठने से गुरूजी का ध्यान बोलू की तरफ कुछ कम जाता था। उनका मन बोलू से प्रश्न पूछने का

होता तो रुक जाते कि बोलू खूँटी पकड़-पकड़कर आले पर पैर रखते हुए नीचे उतरेगा और उसका उतरना हल्ला मचाते हुए सब लड़के देखेंगे। आले पर बैठे लड़के सरककर जगह बनाते कि बोलू उनके आले से उतरे। हल्ला सुनकर पड़ोस की कक्षा के गुरूजी आते तो उनके पीछे कक्षा के सब बच्चे भी आ जाते। कूना सबसे अधिक ताली बजा-बजाकर खुश होती। वह बोलू पर अपनी मित्रता जताते हुए चिल्लाती, "बोलू उस आले से मत उतरना। इससे उतर।" गुरूजी के सामने उतरता हुआ बोलू गुरूजी को दिखाई नहीं देता। और बोलू गुरूजी के पीछे से उतरता।

गुरूजी बोलू से पूछते, "बोलू मैंने तुमसे प्रश्न कितने दिनों से नहीं पूछा है?"

"दो दिन से गुरूजी," चार कदम गुरूजी के पास आकर बोलू ने कहा। फिर कहा, "गलती हुई गुरूजी। आपने अभी प्रश्न पूछा।" आसपास लड़के खड़े थे। बोलते हुए बोलू जब

इधर-उधर चलता तो लड़के हटकर उसके लिए जगह बना देते।

"अभी कहाँ पूछा?" गुरूजी ने फिर पूछा।

"बोलू मैंने तुम से प्रश्न कितने दिनों से नहीं पूछा है यह भी प्रश्न था न गुरूजी।" विनम्र संकोच से बोलू ने कहा।

"कल किताब से प्रश्न पूछेंगे। तुम नीचे बैठना।" कुछ देर रुककर गुरूजी ने कहा।

"जी गुरूजी।" बोलू ने कहा, दो कदम पीछे हटते हुए।

बोलू जिस आले में बैठता था उससे सटा हुआ रोशनदान था। रोशनदान इतना बड़ा था कि बोलू उसके अन्दर से निकलकर छप्पर पर आ जाता। रोशनदान से बोलू को हवा आती उसके बाल उड़ते। हवा में मोगरे के फूल की गन्ध होती। वह जान जाता कि यह हवा बीनू के घर की तरफ से आ रही है। कभी बौने पहाड़ की जंगली तुलसी की गन्ध आती। कभी घने जंगल की घनी गन्ध। रोशनदान से अबाबील के अचानक आने-जाने से बोलू चौंकता नहीं था। अबाबील की उड़ान हवा का ऐसा झोंका होता जिसको देखो तो लगता हवा का झोंका दिखा।

लड़के-बस्तों को कभी दीवाल में लगे खूँटों में टाँग देते। आले में बैठे हुए लड़के गटापार्चे के सुन्दर गुड्डों जैसे लगते। पढ़ाई के हल्ले के साथ चिड़ियों का चहचहाना पढ़ाई का हल्ला ही होता। हर जगह गौरय्या होती। करीब-करीब सभी खूँटों पर और बस्ते के ऊपर भी। छुट्टी के बाद यदि बस्ता स्कूल में छूट जाता, त्यौहार के कारण दो दिन की और छुट्टी हो जाती तो गौरय्या बस्ते के ऊपर तिनके रखकर घोंसला बनाना शुरू कर देती।

बोलू ज्यों-ज्यों बड़ा हो रहा था बोलते और चलते समय अपने को अधिक हल्का पाता। पाठ का गीत गुनगुनाते हुए चलता तो उसे लगता कि मोगरे की गन्ध की हवा के सहारे चल रहा है। कभी जंगल की घनी गन्ध की उँगली पकड़कर चल रहा है। कभी माँ का आँचल पकड़कर। कभी उड़ती हुई पतरंगी के साथ।

स्कूल में प्रार्थना के समय वह मनुष्य-हित के लिए असीम ज्ञान की मन ही मन प्रार्थना में तल्लीन हो जाता था। उसे लगता कि वह समझदार हो रहा है। और बड़ा भी। वह धरती पर नहीं हवा में खड़ा है। अभी बाजू में खड़े लड़के के कन्धे तक आ रहा था अब कन्धे से ऊपर हो गया। राष्ट्रगीत के समय सीधे खड़े रहने का अनुशासन सभी बच्चों में था। जहाँ स्थिर खड़े होकर बोलना होता वहाँ बोलू को न बोलने की छूट होती। राष्ट्रगीत को मन ही मन गाता परन्तु उसके होंठ हिलते कि वह गा रहा है। और वह स्थिर खड़ा रहता। मन ही मन वह सबके साथ ज़ोर से गा रहा होता। इस तरह स्थिर खड़े रहते हुए गाने में वह पक्षी की तरह उड़ने को व्याकुल हो जाता।

एक दिन बोलू साँझ के साथ एक मीठी धुन गुनगुनाता हुआ घर से निकल पड़ा। गुनगुनाते हुए वह बौने पहाड़ की ओर जा रहा था। बौने पहाड़ के शिखर तक वह पहुँचा। सूर्य कुछ देर में डूबने को था। तरल-सा सिन्दूरी रंग जैसे सूर्य के पिघलने से नीचे फैल रहा था। बोलू पहाड़ की गहराई के मुहाने तक गया। उसने उसमें झाँका तो लगा कि वह गहराई को बहुत नीचे तक धुँधला-सा देख पा रहा है। सूर्य के नीचे डूबने का प्रकाश तराई से पहाड़ की गहराई में कहीं से जाता हो। तभी उसे शहद की गन्ध आई। शायद मुहाने के पास ही मधुमक्खी ने छत्ता बनाया हो। मधुमक्खी की भिनभिनाहट भी सुनाई दी। शहद से भरकर छत्ता पक गया था। छत्ता पत्थर के गिरने की सीध में नहीं पड़ता था। नहीं तो छत्ता टूट जाता। उसने सोचा कि वह अपने मित्रों को यह बताएगा। मधुमक्खी को वह आते-जाते देखना चाहता था। पराग कण के लिए मधुमक्खी बाहर आती होंगी। कुछ देर वह रुका पर एक भी मधुमक्खी आते-जाते नहीं दिखी। उसके मन में आया कि पहाड़ की गहराई में फूलों से भरा एक बगीचा होगा। इसलिए मधुमक्खी ऊपर न आती हो। चकमक

जारी...